जोहान्सबर्ग
अप्रैल २६, २००८

संदेश संख्या – १४२

# शिक्षा, दीक्षा, भिक्षा

गम्भीर एवं गहरे संस्कृत शब्दों का जब दूसरी भाषाओं में अनुवाद किया जाता है तब उनके सम्प्रेषण–क्षमता के साथ समझौता किया जाता है । फिर भी, जहाँ तक सम्भव हो सके, उपर्युक्त शब्दों की समझदारी की साझेदारी की जाय।

शिक्षा–इसका अर्थ है उधारी एवं बासी (Second Hand) सूचनाओं का संग्रह जिसमें प्रदूषित सूचनायें भी हो सकती है । इन सबकी उपयोगिता बाह्य जगत के कार्यों में हो सकती है क्योंकि वहाँ कर्त्ता एवं कर्म के रूप में स्पष्टतया द्वैत होता है । यह शिक्षा बोझ के समान है । ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी पात्र में जल भरकर उसे अपनी सिर पर रखकर हमेशा ढोये जा रहे हैं । यह मताग्रह एवं दर्प उत्पन्न करता है । यह मानसिक–प्रयत्न एवं ''मैं–पना'' को जन्म देता है । सामान्यतया, इस शब्द का अंग्रेजी अनुवाद ''एजुकेशन (education)'' के रूप में किया जाता है । दावा तो किया जाता है कि इससे व्यक्ति में मौलिक परिवर्तन होता है किन्तु ऐसा होता नहीं । देखा जाता है कि एक अशिक्षित मूर्ख शिक्षा प्राप्ति के बाद शिक्षित मूर्ख बन जाता है और मूखर्ता बनी ही रहती है । एक अशिक्षित अंधविश्वासी व्यक्ति पढ़ा–लिखा अंधविश्वासी व्यक्ति बन जाता है और अंधविश्वास जारी रहता है, इत्यादि ।

दीक्षा–इसका अर्थ है ज्ञात से मुक्ति अर्थात् सूचनाओं का संग्रह और अतीत के बोझ से मुक्ति । यद्यपि इस मुक्ति में भी दैनिक जीवन में व्यावहारिक आवश्यकतानुसार पर्याप्त एवं सम्यक् प्रकार से कार्य करने के लिए समय–समय पर जानकारी उपलब्ध होती रहती है । यह पात्र में जल भरकर रखना नहीं है बल्कि प्रज्ञा–जागरण का आनन्द है । जागरण (Awareness) एवं अवधान (Attention) की अग्नि को प्रज्वलित करना ही दीक्षा है । यह जीवन की समझदारी का उदय है । परम्परागत रूप से इसका अंग्रेजी अनुवाद–इनिशियेशन (Initiation) के रूप में किया जाता है । किन्तु इनिशियेशन का अर्थ प्रभावित करना भी है । एक जीवन दूसरे जीवन को प्रभावित करने में रुचि नहीं रखता। प्रत्येक जीव में जीवन अद्वितीय रूप से खिलता है । मन जीवन से अलग है और वही प्रभावित करना चाहता है और प्रभावित होना चाहता है । इसी कारण पुरोहित–वर्ग, राजनेता, गुरू, अभिनेता, ठग, मिडिया (संचार–तंत्र), व्यापारिक–घराने, धर्म और माफिया फलते–फूलते हैं और लोगों के लिए तबाही का कारण बनते हैं । दीक्षा ''मैं'' से छुटकारा पाने के लिए चित्तवृत्ति में मौलिक परिवर्तन है न कि नई छवियों एवं मुखौटों के साथ ''मैं'' का पुनर्निर्माण।

मूर्ख मन इन संदेशों को केवल शिक्षा के रूप में लेता है जबकि बुद्धिमान व्यक्ति के लिए ये दीक्षा का काम करती हैं । एक पुराने क्रियावान मित्र हैं जो क्रिया–अभ्यास एवं दीक्षा–कार्यक्रमों के दौरान अनुवाद में मदद करते हैं, इसके बावजूद वे इन संदेशों के प्रति अपना विचार बदलते रहते हैं । एक बार उन्होंने लिखा कि जब भी उन्हें संदेश मिलता है वे स्वयं को धन्य समझते हैं । फिर एक अवसर पर वे गुस्सा हो गए और उन्होंने कहा कि ये संदेश केवल आलोचनायें और वाद–विवाद हैं । उसके बाद एक संदेश पढ़कर उनमें विस्फोट हो गया और लम्बे समय तक वे चुप रहे । फिलहाल, वे उदार हो गए हैं तथा उन्होंने प्रमाणपत्र दिया है कि संदेश संख्या १३६ और १४० में आलोचना तथा वाद–विवाद नहीं है । उनके द्वारा कभी देखना हुआ ही नहीं और न ही कभी स्वाध्याय में साझेदारी हुई, केवल निष्कर्ष निकालना एवं मूल्यांकन करना हो रहा है । इसीलिए उनके लिए जो दीक्षा हो सकती थी, मात्र शिक्षा बन कर रह गयी है ।

भिक्षा–यह दान है, माँग नहीं । जो दूसरों को दीक्षा देते हैं, वे केवल दान पर ही जीते हैं । वे कभी माँग नहीं रखते । दीक्षार्थियों के प्रेम एवं समझदारी द्वारा ही उनका देखभाल होता है । मूल्यहीन शिक्षा का भी एक मूल्य होता है लेकिन किसी सद्गुरु से मिली दीक्षा अमूल्य है, यह किसी भी निष्कष एवं मूल्यांकन से परे है । भिक्षा को दक्षिणा भी कहा जाता है और यह अनाम 'भगवत्ता' के हजार नामों में से एक है ।

जय दीक्षा !

(शून्यता में शून्यता द्वारा शून्यता का अवलोकन)